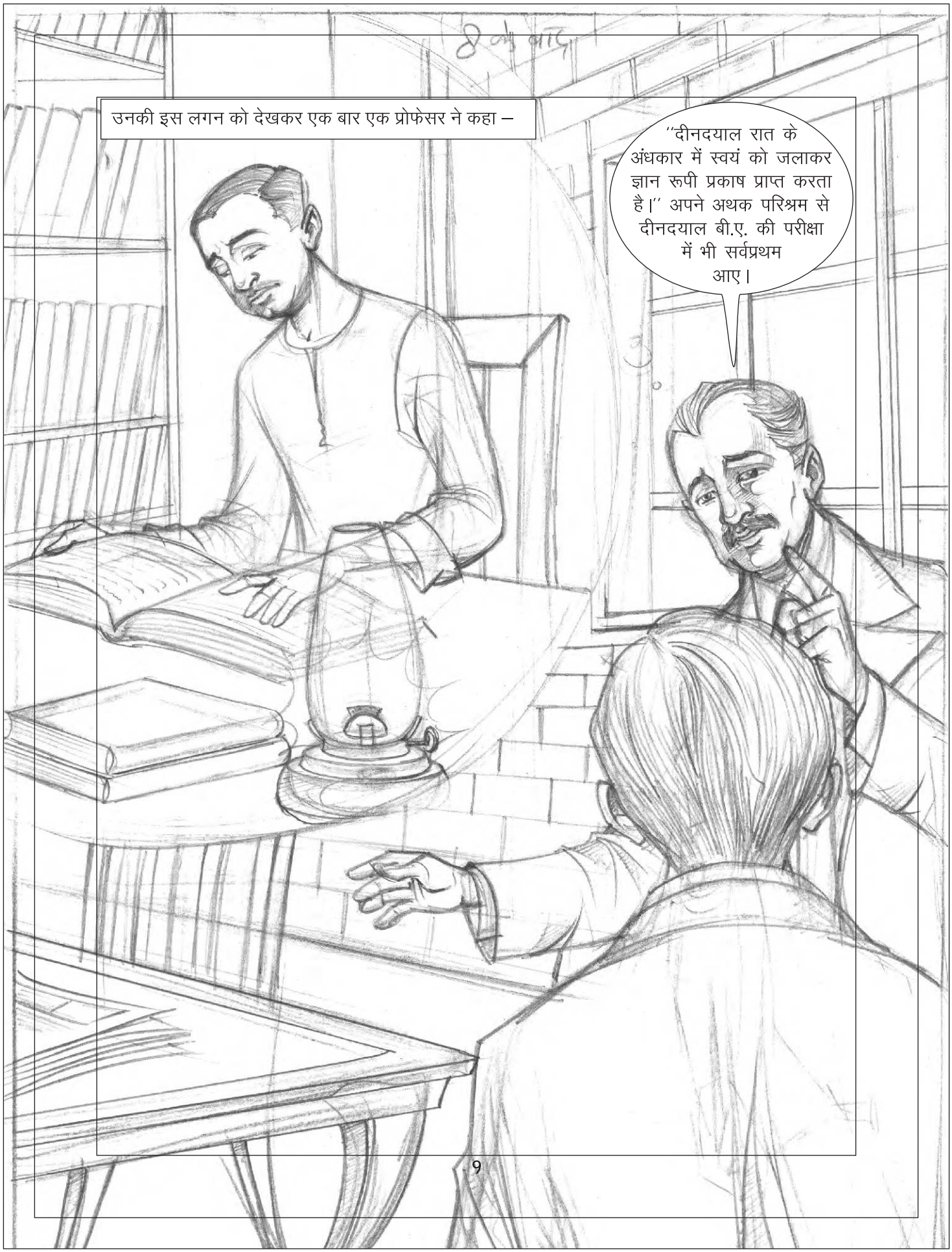
उनकी इस लगन को देखकर एक बार एक प्रोफेसर ने कहा –
''दीनदयाल रात के अंधकार में स्वयं को जलाकर ज्ञान रूपी प्रकाष प्राप्त करता है।'' अपने अथक परिश्रम से दीनदयाल बी.ए. की परीक्षा में भी सर्वप्रथम आए।